Vol III Issue VII April 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 7 | April. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X

Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

जायसी के 'पद्मावत' का अंतर्पाठीय विश्लेषण

प्रेमवती

(नॉन कॉलेज)
गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.

सारांश :-

आदिकाल से ही साहित्य को समझने के लिए विभिन्न मत, विचारधारा, अध्ययन पद्धतियों और सिद्धान्त विकसित होते चले आए हैं। जिसमें भारतीय मनीषियों के साथ–साथ पश्चिम के विद्वानों का योगदान भी रहा हैं। प्राचीन काल में साहित्य को समझने के लिए ऋग्वेद, उपनिषद् इत्यादि सहायक सिद्ध हुए हैं। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, रस, अलंकार, इत्यादि के माध्यम से भी साहित्य के प्रयोजन को समझने का प्रयास किया जाता रहा है। हिन्दी के आचार्यों ने समय–समय पर साहित्य से संबंधी विचार प्रस्तुत किये हैं। जो पाश्चात्य के विचारों से भी प्रभावित होते रहे हैं। आधुनिक युग में साहित्य को देखने–समझने एवं परखने के अनेकानेक अध्ययन पद्धतियों एवं साहित्य सिद्धान्तों का विकास हुआ। जो साहित्य के मूल्यांकन को एक नए सिरे से व्याख्यायित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

प्रस्तावना –

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक पद्धति, समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति, अन्तर–अनुशासनात्मक पद्धति और अंतर्पाठीय अध्ययन पद्धति इत्यादि का प्रमुखता से उल्लेख किया जाता है। आज साहित्य की परिधि का विस्तार भी हुआ है। साहित्य के अध्ययन की अंतर्पाठीय पद्धति के माध्यम से किसी भी साहित्यिक विधा की जाँच पड़ताल एवं उसका विश्लेषण किया जा सकता है। इस पद्धति के द्वारा यह समझने में आसानी हो जाती है कि किन आधार बिन्दुओं पर दो पाठों के बीच अंतर्संबंध स्थापित किये जा सकते हैं। वे आधार बिन्दु शब्द, ध्वनि, चरित्र, कथ्य शिल्प, भाषा इत्यादि हो सकते हैं। उदाहरण के लिए जैसे यदि कोई ब्रंजभाषा से प्रचलित 'हटरी' से परिचित नहीं तो वह सूरसागर में इस शब्द को 'हठरी' कर सकता है, क्योंकि उसकी दृष्टि से 'हटरी' कोई शब्द ही नहीं। अंतर्पाठीयता के दौरान यह संभव नहीं कि पाठक या आलोचक सभी शब्दों समस्त अर्थों से परिचित होगा। अतः पाठविज्ञान से जो रूप निर्धारित हो, उसे ही रखना चाहिए, क्योंकि कोई ऐसा शब्द हो सकता है जिसका अर्थ आगे ज्ञानवर्द्धक हो।

अंतर्पाठीय अध्ययन पद्धति के साहित्य को समझने के अपने तत्व और औजार होते हैं। अतः इस प्रकार अंतर्पाठीयता का अर्थ पुनः प्रकाशन, पुनर्पाठ इत्यादि के रूप में समझा जा सकता है। एक मुक्त ज्ञानकोष के रूप में स्थापित विकीपीडिया पर इसकी परिभाषा इस प्रकार से की गई है। "अंतर्पाठीयता एक द्वारा किसी पूर्व पाठ के अर्थ को आकार देना है। एक लेखक के द्वारा किसी पूर्व पाठ का अनुकरण करना व उसको परिवर्तित करना अथवा एक पाठ में दूसरे पाठ को संदर्भित करना अंतर्पाठीयता है।"[1]

अंतर्पाठीयता शब्द उत्तर–संरचनावादी जूलिया क्रिस्टीवा द्वारा 1966 में सृजित किया गया था। आलोचक इरविन का कहना है कि इस शब्द के उतने ही अर्थ है जितने कि उसके प्रयोगकर्ता, चाहे वे क्रिस्टीवा की मूल दृष्टि के अनुगामी हों या वे हों जो इसका प्रयोग एक पाठ में किसी नए ढंग का संकेत अथवा प्रभाव देना चाहते हैं। उदाहरणस्वरूप हम कह सकते हैं कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के पाठ अर्थात् टेक्स्ट को अलग–अलग दृष्टि से पढ़ने व समझने की प्रक्रिया आज तक विद्यमान है। एक स्त्री उसका पाठ स्त्री–विमर्श के संदर्भ में

Title: "*जायसी के 'पद्मावत' का अंतर्पाठीय विश्लेषण* ",
Source: Review of Research [2249-894X] *प्रेमवती* **yr:2014 | vol:3 | iss:7**

करती वे समझती है व सामंत मानसिकता के रूप में उसे उद्देश्य अलग–अलग ही होगा। यही अंतर्पाठीयता हैं अलग ढंग से व्याख्यायित करती है।

अतः स्पष्ट है कि विलियम इरविन की बात मानी जाए तो अंतर्पाठीयता शब्द के जितने प्रयोगकर्ता हुए, उतनी ही इसकी व्याख्याएँ की गई। उत्तर–संरचनावादी जूलिया क्रिस्टीवा ने साठ और सत्तर के दशकों में अंतर्पाठीय अध्ययन पद्धति का जिक्र किया। जिसके माध्यम से एक पाठ का अन्य पाठकों में संदर्भित अर्थों को मिलाने का प्रयास सार्थक हुआ। यह अवधारणाओं को एक पाठ के केन्द्र में रखकर दूसरे पाठ से अर्थ ग्रहण करने की पहल थी।

समर्थ आलोचक पूर्व पाठ में निहित अर्थों के जरिए दिए गए पाठ की अर्थ–मीमांसा करता है। जैसे मैथिलीशरण गुप्त के साकेत की 'उर्मिला' को समझने के लिए मध्यकालीन गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में वर्णित 'उर्मिला' को देखना भी बेहद जरूरी है। इस प्रकार 'अंतर्पाठीयता' की शैली का उपयोग कर एक ही साथ सर्जक, पाठक और आलोचक तीनों ही अपनी दृष्टि को व्यापक बनाते हैं।

अंतर्पाठीयता शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ से ही स्पष्ट है कि यह दो पाठाकें के बीच की संरचना, साझा अर्थ और साझा अवधारणाओं पर केन्द्रित शैली है। संरचनावादी सस्यूर का मानना है कि साहित्यिक कृतियों की भाषा का अध्ययन उनमें नए अर्थों की खोज करता है। सस्यूर यह दावा करते हैं कि पाठ की संरचना विशेष प्रकार के संकेतों से बनी होती है और वे ही पाठ के अर्थ–निर्धारक हुआ करते हैं। लेकिन जूलिया क्रिस्टीवा का मानना है कि पाठकों की एकाग्रता, दूरदर्शिता के कारण, अन्य पाठों के समरूपी व साझा अर्थ भी उसी अनुपात में दिए गए पाठ तक पहुँचते हैं अर्थात् किसी पाठ का अर्थ लेखक और पाठक के बीच सीधे संवेदित न होकर अन्य पाठों की रोशनी में ही संभव हो जाता है।

'Intertextuality' शब्द का विकास भाषा–विज्ञान की एक महत्वपूर्ण देन है जिसके बीज सस्यूर की मान्यताओं में भी दिखाई देते हैं। ब्राख्तिन के विचारों से प्रभावित क्रिस्टीवा अंतर्पाठीयता के द्वारा यह बताने का प्रयास करती हैं कि पाठों की व्याख्या, उनके अर्थ और उनमें बोधगम्यता पूर्वपाठों के साथ उसके साझा–संबंध के कारण ही संभव हो पाता है। इसे ग्राहम ऐलेन ने अपनी पुस्तक 'Intertextuality' में कुछ इस तरह स्पष्ट किया है। "No text has meaning alone all texts have meaning in relation to other texts."[2]

कहा जा सकता है कि किसी भी पाठ का स्वायत्त निरपेक्ष अर्थ नहीं होता। अपने अर्थ को बताने के लिए उसे दूसरे पाठ से साहचर्य की आवश्यकता होती है। ग्राहम ऐलेन अपनी पुस्तक में अंतर्पाठीयता के साथ युग्म बनाकर कई वादों जैसे मार्क्सवाद, उत्तर उपनिवेशवाद, विखण्डवाद आदि की परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करते हैं और इस मान्यता को बल देते हैं कि पाठों के बीच का संबंध 'Intertextuality' के जरिए ही समझा जा सकता है।

अतः मैंने जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' का अंतर्पाठीयता अध्ययन पद्धति से विश्लेषण किया है। जिसमें मैंने जायसी के प्रेम–स्वरूप को विभिन्न संदर्भो में देखने व समझने का प्रयास किया है।

'पद्मावत' मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित एक प्रेमाख्यानक महाकाव्य है। जायसी निर्गुण भक्ति की प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि तथा प्रमुख कवि के रूप में ख्यात है। उन्हें मध्यकालीन कवियों की पहली पंक्ति में लाने तथा एक प्रमुख कवि के रूप में प्रतिष्ठित करने में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का योग सर्वोपरि है। शुक्ल जी की दृष्टि जब जायसी की कवि प्रतिभा की ओर गई और उन्होंने जायसी ग्रंथावली का संपादन करते हुए उन्हें प्रथम श्रेणी के कवि के रूप में पहचाना, उसके पहले जायसी को इस रूप में नहीं देखा और सराहा गया था। निःसंदेह, जायसी को विस्मृति तथा अधूरी और अपर्याप्त पहचान से, उबारने और उन्हें सूर, तुलसी के समक्ष प्रतिष्ठा देने का सारा श्रेय आचार्य शुक्ल को है।

जायसी शुक्ल जी के लिए हिन्दी के तीन बड़े कवियों में गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास के साथ परिगणित हुए। जायसी की कविता से वे इस कदर अभिभूति हैं कि ग्रंथावली की भूमिका में कविता, खासतौर से प्रबन्ध कविता के आयाम पर उन्होंने, उन्हें कुछेक पहलुओं पर गोस्वामी तुलसीदास से अधिक सफल माना है। सूरदास ने भी आचार्य शुक्ल के समीक्षक की भरपूर संवेदना पाई है, जायसी इस बिन्दु कर सूरदास को पीछे छोड़ते हुए गोस्वामी तुलसीदास के समक्ष खड़े होते हैं। उनकी सहृदयता, जो छन कर उनकी कविता में आई है, उसे लक्ष्य करते हुए ही शुक्ल जी ने लिखा है कि "जो काम कबीर की अटपटी वाणी नहीं कर सकी, साधारण हिन्दू–मुसलमान जनता को एक–दूसरे के करीब लाने का वह काम जायसी ने किया।"[3]

अतः कहा जा सकता है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ही पहले ऐसे आलोचक हैं, जिन्होंने 'सेक्युलर' मानसिकता के एक बड़े कवि के रूप में जायसी को हिन्दी जगत् से परिचित कराया। इतना ही नहीं, जायसी की पहचान एक अत्यन्त सहृदय और संवेदनशील, आदमीयत से भरपूर इंसान के रूप में भी उन्होंने की, लिखा है कि– "मुसलमान होते हुए भी उन्होंने अपने आदमी होने का परिचय दिया।"

विजयदेव नारायण साही दूसरे व्यक्ति हैं, आचार्य शुक्ल और मलिक मुहम्मद जायसी सम्बन्धी उनके विचारों से सीधे अपना नाता न जोड़ते हुए भी, जहाँ तक जायसी की 'सेक्युलर' मनोभूमि का, उनकी सहृदयता और संवेदनशीलता का और सबसे आगे उनकी आदमीयत का सवाल है, अपनी जमीन से जिस तरह इन मुद्दों की चर्चा की है, प्रकारांतर से शुक्ल जी की मान्यता उससे पुष्ट ही हुई है। जायसी के कवि और कवि का व्यक्तित्व पर साही के चिनतन का जो निचोड़ है, वह जायसी को एक बड़ी और प्रशस्त मानसिकता के रचनाकार के रूप में ही हमसे परिचित कराता है।

साही के शब्दों में "सबसे पहले जिस बात को अच्छी तरह मन में बिठाना जरूरी हे, वह यह है कि जायसी हिन्दी के पहले विधिवत् वरिष्ठ कवि है।"[4] अर्थात् वह कबीर, मौलाना दाऊद (चन्दायन रचना), कुतुबन से वरिष्ठ कवि है।

आगे वे कहते हैं "जायसी केवल कवि नहीं है, वे आत्म सजग कवि हैं। अपने कवि होने का, गुणी होने का उन्हें पूरा भरोसा, बल्कि गर्व है। अपने कवि और गुणी होने का जिक्र पद्मावत में जायसी ने आरम्भ, मध्य और अन्त में बार–बार प्रत्यक्षतः या परोक्षतः किया है।"

"मुमद कबि जो प्रेम का ना तन रकत न माँसु।
जेइँ मुँख देखा तेहँ हँसा सुना तो आए आसुँ।।
एक नैन कबि मुहमद गुनी।
सोइ बिमोहा जेइ कवि सुनी।।"[5]

अतः स्पष्ट है कि जायसी को सूफी संत और साधक होने की अपेक्षा प्रेम के कवि के रूप में, प्रेम की पीर के कवि के रूप में देखना ही अधिक संगत है।

'पद्मावत' एक प्रेमाख्यान महाकाव्य है। अगर हम पद्मावत में प्रेम के संदर्भ में इसका पन्तर्पाठीय विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि 'पद्मावत' ने एक सूफी कवि द्वारा लिखा गया है। और जिस 'इश्क–हकीकी' का जिक्र आचार्य शुक्ल ने सूफियों के प्रसंग में किया है उसकी स्थिति उसमें होगी। परन्तु जायसी का भक्त वाला, रहस्यवादी या सूफी रंग वाला रूप बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। जिसे आचार्य शुक्ल और साही ने भी स्वीकारा है। अतः सूर की भांति, आध्यात्मिक संदर्भों को हटाकर महज प्रेम की, मानवीय तथा लौकिक प्रेम की कविता के रूप में जायसी की रचना को परखा जाए।

जायसी ने 'प्रेम की पीर' को तमाम सारी लीक पीटने के बावजूद, मानवीय तथा लौकिक भूमि पर भी बड़ी भावुकता के साथ प्रस्तुत किया है। जिसे शिवकुमार मिश्र, मैनेजर पाण्डेय ने भी स्वीकारा।

मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं "जायसी प्रेम के कवि के रूप में विख्यात हैं। उनके अनुसार संसार में प्रेम से अधिक सुदर और काम्य कुछ भी नहीं है। प्रेम ही मनुष्य के जीवन का चरम मूल्य है, जिसे पाकर मनुष्य बैकुंठी होता है, अन्यथा वह एक मुट्ठी राख नही तो और क्या है– 'मनुष्य प्रेम भएउ बैकुंठी, नाही त काह छार भरि मुट्ठी।"[6]

वहीं दूसरी तरफ विजयदेव नारायण साही ने लिखा है कि– "जायसी ऐसे कवि है जिसे बैकुंठी प्रेम की तलाश नहीं है, जो ऐसा प्रेम चाहता है जो प्रेम करने वाले मनुष्य को ही बैकुंठी बना दे।"[7] अतः स्पष्ट है कि जायसी के प्रेम वर्णन की लगभग सभी आलोचकों ने भूरि–भूरि प्रशंसा की है। परन्तु सवाल उठता है कि जायसी ने प्रेम के जिस रूप को 'पद्मावत' में उभारा है उसका स्वरूप क्या है। आचार्य शुक्ल ने 'जायसी ग्रंथावली' की भूमिका में उसकी चर्चा की है। शुक्ल के अनुसार वह प्रेम है जो स्वप्न दर्शन, चित्र दर्शन, गुण–श्रवण के उपरान्त मन में उदय होता है। इसमें प्रायः तीव्रता नायक की ओर से होती है जो बाद में दूसरे पक्ष में भी दिखाई पड़ती है।

जाहिर है कि 'पद्मावत' में प्रेम का जो रूप है वह ऐसा ही है। इसमें हीरामन तोते से सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती के रूप की प्रशंसा सुनकर रत्नसेन दीवाना होकर उसको पाने के लिए चल देता है। तमाम आपत्तियाँ विपत्तियाँ झेलने के बाद वह सिंहल द्वीप पहुँचता है और पद्मावती से विवाह करता है। इसके बाद कथा कुछ इतिहास के आधार पर चलती है। अन्त में नागमती और पद्मावती दोनों रत्नसेन की चिंता में उसके साथ भस्म हो जाती है। फारसी की प्रेम कहानियों के तरीके का प्रेम होते हुए भी जायसी की अपनी भारतीय सोच के नाते 'पद्मावत' का प्रेम फारसी प्रेम कहानियों की बहुत सी विशेषताओं को समेटते हुए भी अपने को विशिष्ट बना सका है। शुक्ल के अनुसार जायसी ने उसे एकान्तिक नहीं होने दिया। यह भारत की अपनी जमीन से जायसी का लगाव था जिसके चलते उन्होंने रत्नसेन और पद्मावती के प्रेम को जीवन की तमाम स्थितियों के बीच से, तमाम सारे नाते रिश्तों के बीच से गुजारते हुए उसे एकान्तिक नहीं होने दिया।

इसी बिन्दु पर आचार्य शुक्ल ने सूरदास में कृष्ण और गोपियों के प्रेम की भी आलोचना की है। उनके अनुसार कृष्ण और गोपियों का प्रेम भले ही बहुत स्वाभाविक और उदात्त प्रेम हो, उसमें लोकपक्ष का अभाव है। वह एकान्तिक प्रेम है। उसका विकास जीवन की नाना स्थितियाँ और व्यवहारों के बीच नहीं होता। इसके विपरीत राम और सीता के प्रेम को उन्होंने आदर्श माना है और तुलसीदास की प्रशंसा की है।

अगर देखा जाए तो जायसी पति–पत्नि के सार्वजनिक जीवन में सीता–राम जैसी आदर्श की बात करते हैं लेकिन रति प्रसंगों में उनका नियंत्रण टूट जाता है। यहाँ उनका आदर्श खंडित हो जाता है। संभोग क्रीडा में वे दिखाते हैं कि रत्नसेन पद्मावती पर ऐसे टूटता है जैसे राम–रावण का भीषण युद्ध हो रहा हो।

'कहौ जुझि जस रावन रामा'

यह राम और सीता के आदर्श और नैतिकता के उलट है। आश्चर्यजनक बात है कि घोर नैतिकतावादी, मर्यादावादी, आदर्शवादी रामचन्द्र शुक्ल ऐसे प्रसंगों पर चुप हैं। उनका लोकधर्म (?) कौमार्य (सेक्सुअल आक्रामकता, युद्धरत यौन संबंधों) के इन प्रसंगों से भंग नहीं होता है। चूँकि जायसी लोक व्यवहार और विधि–पालन कराने वाले कवि हैं इसलिए उन्हें कटघरे में खड़े करने के बजाय माफ कर दिया गया है।

जायसी कहते हैं कि जो स्त्री पति की आज्ञा मानती है और विनम्रता से अपनी सेवाएँ उसके भेंट करती हैं जीवन में सदा सुखी, संतोषी रहती है–

"रहै जो पिय के आएसु और बरतै होई खीन
सोई चाँद अस निरमरि जनम न होई मलीन।।"[8]

अतः स्पष्ट है कि पितृसत्ता ऐसी ही अनुकूलता चाहता है। जायसी स्त्री की ऐसी छवि बनाते हैं। दिखाते हैं जो पुरुषों के अधीन है। अतः हम कह सकते हैं कि मध्यकाल में पुरुषों ने स्त्रियों को उपनिवेश बना लिया था। वे उसी को उत्तम स्त्री मानते हैं जो सेक्स के मामले में दक्ष हो और सेक्स के दौरान संतुष्ट होती है।

जायसी कहते हैं कि– "जो भावै सो होई मोहि तुम्हहिं पै चहौं अनंद' भले मेरा चाहे जो हो, लेकिन सेक्स के दौरान तुम्हारे लिए आनंद चाहती हूँ। यह जायसी के स्त्रीवादी प्रमिमान है। लेकिन आश्चर्य है घोर नैतिकता और मर्यादावादी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल चुप हैं, क्योंकि जायसी 'लोकधर्म' (?) का निर्वाह करने वाले कवि हैं। अतः स्पष्ट है पद्मावत में एक प्रेम का वर्णन आचार्य शुक्ल ने किया और दूसरा उसका पाठ प्रेम के संदर्भ में साही व वासुदेव शरण अग्रवाल करते हैं।

पद्मावत में आचार्य शुक्ल ने रत्नसेन के नायकत्व के संदर्भ में जो पाठ किया है उसको भी देखते हैं। वे कहते हैं कि रत्नसेन के चरित्र को 'भवोत्कर्ष' की दृष्टि से देखना चाहिए न कि 'लोकनीति' की दृष्टि से।

शुक्ल जी की रत्नसेन के संदर्भ में इन पंक्तियों को दखें–"प्रेम के साधनकाल में रत्नसेन में जो साहस, कष्टसहिष्णुता, नम्रता, कोमलता, त्याग आदि गुण तथा अधीरता, दुराग्रह और चौर्य आदि दुर्गुण दिखाई देते हैं वे प्रेम जन्य हैं, वे स्वतन्त्र गुण या दोष नहीं माने जा सकते।"[9]

अतः जायसी ने पद्मावत में एक तरफ तो पत्नी को मतिहीन, मूर्ख, नासमझ आदि–आदि कहकर गालियाँ देने वाला रत्नसेन, और वहीं दूसरी तरफ दूसरी स्त्री पद्मावती के रूप सौंदर्य 'नख–शिख वर्णन' सुनकर उसे पाने की लालसा से जा रहे रत्नसेन का मूल्याकंन किस रूप में किया जाना चाहिए। रत्नसेन को डिफेंड करने के बजाय क्या यहाँ रामचन्द्र शुक्ल को रत्नसेन के उस व्यवहार से सवाल नहीं करना चाहिए कि आखिर भर्तृहरि का उदाहरण देने वाला 'योगी रत्नसेन' पद्मावती को अपनी व्याहता क्यों बनाना चाहता है? रति क्रीड़ा में क्यों संलग्न होता है? जब रत्नसेन को नागमती के विरह की सूचना मिलती है वह सिंघल नरेश और पद्मावती से झूठ बोलता है कि उसके राज्य को उसके भाई हथिया लेना चाहते हैं। जबकि सच यह है कि वह पुनः नागमती के आकर्षण में लौटता है।

माता की हृदयविदारक चीख उसके बहरे कानों तक पहुँचती ही नहीं है। पद्मावती को पाने के लिए नागमती और नागमती को पाने के लिए पद्मावती के साथ फरेब करता है, झूठ बोलता है। यह लंपटता और धूर्तता नहीं है तो क्या है? साही ने ठीक ही लिखा है– " पद्मावती को तो छोड़िए, सचमुच यह रत्नसेन नागमती के भी योग्य हैं या नहीं?"[10]

एक स्त्री के साथ इससे ज्यादा धोखा और क्या हो सकता है? वह न सिर्फ दोनों–नागमती और पद्मावती का चरित्र हनन करता है, उनका अनादर भी करता है। वह उन्हें 'भोग्या' से ज्यादा का तवज्जों नहीं देता है।

जायसी ने सबसे ज्यादा 'फीमेल सेक्सुअलिटी' पर लिखा है और इसे स्त्री के लिए खतरनाक और पुरुष के लिए अच्छा बताया हैं। अतः जायसी के ये विचार पुरुष–सत्तात्मक हैं। जायसी की मर्दवादी दृष्टि ने नागमती को पूरी तरह समझा दिया है कि क्या रानी और क्या दासी, जिस पर पुरुषवादी, मर्दवादी, सामंत ताकतों का वरदहस्त होता है वही भली है। जायसी सारे तर्क, सत्य, नैतिकता, आदर्श और मूल्य मर्दों के पक्ष में गढ़ते हैं, बनाते हैं वे कहते हैं– 'जौं सतवादी पुरुष कहावा'[11]

अतः स्पष्ट है कि जायसी के प्रेम का स्वरूप एक वो है जिसे आचार्य शुक्ल ने लोकधर्म के संदर्भ व्याख्यायित किया और दूसरा वह है जिसे साही और वासुदेवशरण अग्रवाल ने उपनिवेशवाद, पितृसत्तात्मक, सामंती मानसिकता के संदर्भ में समझा और हमें दिखाया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.विकीपीडिया
2.Interextuality, Graham Allen
3.हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4.जायसी, साही, पृ. 31
5.जायसी, विजयदेव नारायण, साही, पृ. 31
6.भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य, मैनेजर पाण्डेय, पृ. 36
7.जायसी, साही
8.वसुदेव शरण अग्रवाल, पद्मावत, पृ. 88
9.आचार्य शुक्ल, जायसी, ग्रंथावली, पृ. 1117
10.विजयदेव नारायण साही–जायसी, पृ. 112
11.वासुदेव शरण अग्रवाल, पद्मावत, पृ. 104

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net